प्रातःक्लास 6.4.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे–2 बच्चों को समझाया गया है एक है ज्ञान दूसरा है भक्ति। ड्रामा में यह नूँध है। ड्रामा के आदि, मध्य, अंत को और कोई भी नहीं जानते। तुम बच्चे ही जानते हो। सतयुग में मरने का कब भी डर नहीं। जानते हैं एक शरीर छोड़ हमको दूसरा लेना है। दुःख की, रोने की बात ही नहीं। अभी इस समय यहां क्या विचार है? मरने से डर रहता है। आत्मा को शरीर छोड़ने से दुःख होता है। डरते हैं; क्योंकि फिर दूसरा जन्म भी ले दुःख ही भोगना है। तुम तो हो संगमयुगी। तुम बच्चों को बाप ने समझाया है अभी वापस चलना है। कहां? घर। वह भगवान का घर है ना। यह कोई घर नहीं है। जहां भगवान और तुम आत्माएं रहती हैं उसको ही घर कहा जाता है। वहां शरीर है नहीं। जैसे मनुष्य कहते हैं हम भारत में रहते हैं, घर में रहते हैं। वैसे तुम भी कहेंगे हम लोग अर्थात् हम आत्माएं वहां अपने घर में रहते हैं। वह है ही आत्माओं का घर। यहां है जीवात्माओं का घर। उनको कहा जाता है मुक्तिधाम। मनुष्य पुरुषार्थ तो करते हैं वहां जाने लिए कि हम भगवान से जाकर मिलें। भगवान से मिलने लिए तो बहुत खुशी होनी चाहिए। यह तो आत्मा का शरीर है। इनमें आत्मा का बहुत मोह पड़ गया है; इसलिए थोड़ा भी बीमारी होती है तो डर लगता है शरीर न छूट जाये। अज्ञान काल में डर रहता है। इस समय जबकि संगमयुगी है तुम जानते हो वापस जाना है बाप के पास। तो डर की बात ही नहीं। बाप ने युक्ति बहुत अच्छी बताई है। पतित आत्मा तो मेरे पास मुक्तिधाम में आ नहीं सकता। वह है ही पवित्र आत्माओं का घर। यह है मनुष्यों का घर। यह शरीर बनते हैं 5 तत्वों से। तो 5 तत्व यहां रहने लिए खैंचते हैं। आकाश ..... वहां तो यह तत्व हैं नहीं। यह विचार–सागर–मंथन करने की युक्तियां हैं। यहां प्रकृति क्यों पकड़ती है? क्योंकि आत्मा ने यह जैसे प्रॉपर्टी ले ली है। तो शरीर में ममत्व हो जाता है। नहीं तो हम आत्माएं वहां के रहने वाली हैं। अभी फिर पुरुषार्थ करते हैं वहां जाने लिए। इस पुरानी शरीर को छोड़ देवें। जब तुम पवित्र आत्माएं बन जाते हो फिर तुमको सुख ही मिलता है। दुःख की बात ही नहीं। इस समय है ही दुःखधाम। तो यह 5 तत्व भी खैंचते हैं। ऊपर से नीचे आकर पार्ट बजाने लिए प्रकृति का आधार तो लेना पड़ता है। नहीं तो खेल चल न सके। यह खेल भी बना हुआ है सुख और दुःख का। जब तुम सुख में थे तो 5 तत्वों के शरीर से ममत्व नहीं रहता है। वहां तो पवित्र ही रहते हैं। इतना ममत्व नहीं रहता है शरीर में। इन 5 तत्वों का ममत्व भी छोड़ देते हैं। हम पवित्र बने फिर वहां शरीर भी योगबल से बनते हैं; इसलिए माया खैंचती ही नहीं। हमारा वह शरीर योगबल का है; इसलिए दुःख है नहीं। ड्रामा कैसी वण्डरफुल बना हुआ है। यह भी बड़ी महीन समझने की बातें हैं। जो अच्छे बुद्धिवान हैं और सर्विस में तत्पर रहते हैं वह अच्छी रीत समझा सकते हैं। बाबा ने कहा है धन दिये धन ना खुटे। दान करते रहेंगे तो धारणा भी होगी। नहीं तो धारण होना मुश्किल है। ऐसे मत समझो लिखने से धारणा हो जावेगी। हां, लिख किसके कल्याण के लिए प्वाइन्ट भेज सकते हैं तो और बात है। खुद का तो काम नहीं आते हैं। कोई तो काग़ज लिखकर फिर फालतू फेंक देते हैं। यह भी अन्दर में समझ होनी चाहिए। में लिखता हूं फिर वह काम में आते हैं? लिखकर और फेंक दिया। तो उससे क्या फायदा? यह भी आत्मा अपन को जैसे कि ठगती है। यह तो धारण करने की चीज़ है। बाबा ने कोई लिखा हुआ थोड़े ही कंठ किया है। बाप तो रोज़ समझाते ही रहते हैं। पहले–2 तो तुम्हरा बाप से कनेक्शन हो। बाप की याद से ही आत्मा पवित्र बन जावेगी। फिर वहां भी तुम पवित्र रहते हो। आत्मा और शरीर दोनों ही पवित्र रहती है। फिर वह बल खलास हो जाता है तो 5 तत्वों का बल आत्मा को खैंचती है। आत्मा को घर जाने लिए शरीर छोड़ने दिल नहीं होती है। नहीं तो इसमें तो खुशी होनी चाहिए। तुम तो पावन बनते हो। शरीर तो ऐसे छोड़ेंगे जैसे मक्खन से बार(ल)। शरीर से सभी चीज़ों से ममत्व मिटा देना है। हम आत्माएं नंगे आये थे, हम पवित्र थे। इस दुनियां से ममत्व नहीं था। वहां शरीर छूटे तो कोई रोते नहीं हैं। कोई त(क)लीफ़ नहीं। बीमारी नहीं। शरीर से ममत्व नहीं। जैसे आत्मा

पार्ट बजाती है एक शरीर बूढ़ा हुआ तो फिर दूसरा ले लेती है पार्ट बजाने लिए। वहां तो रावण राज्य (ही) नहीं है। तो इस समय दिल होती है जावें बाबा के पास। बाबा कहते हैं मुझे याद करो। यह ज्ञान बुद्धि में है। बाप कहते हैं बच्चे, पवित्र बनकर आना है। अभी तो पतित हैं; इसलिए 5 तत्वों का जो यह पुतला है उनसे ममत्व हो गया है। आधा कल्प से इनको छोड़ने दिल नहीं होती है। नहीं तो विवेक कहते हैं शरीर छूट जाये हम बाबा के पास तो...जावें। तुम अभी पुरुषार्थ करते हो हमको पावन बन बाबा के पास जाना है। बाबा ने कहा है तुम तो मेरे थे। अभी फिर मुझे याद करो तो आत्मा पवित्र बन जावेगी। फिर शरीर धारण करने में कोई तकलीफ़ नहीं होगी। अभी शरीर में मोह है तो डॉक्टर आदि को बुलाते हैं। तुमको तो खुशी रहनी चाहिए हम जाते हैं बाबा के पास। इस शरीर से अभी हमारा कनेक्शन नहीं है। यह शरीर तो पार्ट बजाने मिला है। वहां तो आत्मा और शरीर दोनों ही बड़ी तन्दरुस्त रहती है। दुःख का नाम ही नहीं होता। तो बच्चों को कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। अभी हम बाबा के पास जाते हैं। क्यों नहीं इस शरीर को छोड़ कर जावें; परन्तु जब तक योग लगा कर पवित्र न बने हैं, कर्मातीत अवस्था न बनी है तो जा नहीं सकते। यह खयालात अज्ञानी मनुष्यों को नहीं आ सकती है। तुम बच्चों को आवेगा। अभी हमको जाना है। पहले तो आत्मा में ताकत होती है। खुशी होती है। कब डर नहीं रहता। यहां दुःख है; इसलिए मनुष्य भक्ति आदि करते हैं; परन्तु वापस जाने का रास्ता तो जानते ही नहीं। जाने का रास्ता एक बाप ही ब(त)लाते हैं। हम बाबा के पास जावें इसके लिए खुशी होती है। बाप समझाते हैं यहां तुम्हारा शरीर में मोह है। यह मोह निकालो। यह तो 5 तत्वों का शरीर है। यह सभी माया ही है। इन आंखों से जो कुछ आत्मा देखती है सब माया ही माया है। यहां हर चीज़ में दुःख ही है। कितना गन्द है। स्वर्ग में तो शरीर भी फर्स्ट क्लास, महल भी फर्स्टक्लास मिलेंगे। दुःख की बात ही नहीं। खेल कैसा बना हुआ है? तो यह चिन्तन में आना चाहिए ना। बाप कहते हैं और कुछ नहीं समझते हो अच्छा, सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। स्वर्ग में चले जावेंगे। हम तो आत्मा हैं यह शरीर रूपी दुम्ब बाद में मिला है। इनमें हम क्यों फंसे हैं? बाप समझाते इनको रावण राज्य कहा जाता है। रावण राज्य में दुःख ही है। सतयुग में दुःख की बात ही नहीं। अभी बाबा से हम जैसे कि शक्ति लेते हैं। कैसे लेते हैं? ज़रूर बाप को याद करने से; क्योंकि कमज़ोर बन गये हैं। देह अभिमान है सबसे कमज़ोर। तो बाप बैठ समझाते हैं यह ड्रामा बना हुआ है। यह बन्द नहीं हो सकता। मोक्ष आदि की बात ही नहीं। यह तो बना बनाया ड्रामा है। कहते भी हैं चिन्ता ताकी कीजिए जो अनहोनी होये। पास्ट हो गया। सो फिर भी होना ही है। चिन्ता की बात ही नहीं। यहां चिन्ता लगती है। बाप कहते हैं यह तो ड्रामा है ना। बाप ने रास्ता तो बताया ही है। ऐसे तुम मेरे पास पहुँच जावेंगे। मक्खन से बार(ल) निकल जावेगा। तुम सिर्फ़ मुझे याद करो तो आत्मा पवित्र हो जाये। पावन बनने की और की कोई युक्ति नहीं। अभी तुम समझते हो हम रावण राज्य में बैठे हैं। वह है ईश्वरीय राज्य। ईश्वरीय राज्य और आसुरी राज्य का खेल है। ईश्वर कैसे आकर स्थापना करते यह किसको भी पता नहीं है। बाप को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। वह ही आकर समझाते हैं। अभी तुम सारा ज्ञान समझ रहे हो फिर यह सारा ज्ञान भूल जावेगा। जिस पढ़ाई से हम यह पद पाते हैं वह फिर एकदम भूल जाता है। स्वर्ग में गये और नॉलेज गुम हो जाती है। भगवान ने डबल सिरताज कैसे बनाया वह कुछ जानते नहीं। यह भी नहीं जानता था। तो दूसरे शास्त्र आदि पढ़ने वाले क्या जानेंगे? उनको टच भी नहीं होगा। तुम आकर सुनते हो झट टच होता है। है तो सारा गुप्त। बाप सुनाते हैं, देखने में आता है क्या? समझ में आता है। जैसे आत्मा को देखा है क्या? समझते हैं आत्मा है। हां, दिव्य दृष्टि से देखी जा सकती है। बाबा कहते हैं देखने से भी क्या समझेंगे? आत्मा है तो छोटी बिन्दी ना। आत्माएं तो अनेक हैं। 10–20–50 का भी तुम सा. करेंगे। एक से तो कुछ पता भी न पड़े। एक आत्मा को देखने से समझ भी न सके। बहुतों का सा. हो(ता) (है।)

(मा)लूम कैसे पड़े यह आत्मा है या परमात्मा है? फ़र्क का मालूम नहीं पड़ता। बैठे–2 छोटी–2 आत्माएं देखने में आती है तो समझा जाता है आत्माएं हैं। यह थोड़े ही ..... है आत्माएं हैं या परमात्मा है। अभी तुम समझते हो इतनी छोटी सी आत्मा में ताकत कितनी है। इतना दुम्ब निकल जाता है। आत्मा खुद तो मालिक है। एक शरीर छोड़ दूसरे में प्रवेश करती है पार्ट बजाने लिए। है कितनी कुदरत। शरीर बीमार पड़ता है या कोई दिवाला आदि निकालते हैं तो समझाते हैं इससे तो शरीर ही छोड़ दें। आत्मा निकल जावेगी, दुःख से छूट जावेगी; परन्तु पापों का बोझा जो सिर पर है वह कैसे छूटे? तुम पुरुषार्थ करते हो कि याद से पाप विनाश हो। रावण के कारण बहुत पाप हुये हैं। जिससे छूटने का रास्ता बाप ही बतलाते हैं। सिर्फ़ कहते हैं मुझे याद करते रहो। याद करते–2 शरीर छूट जाये। तुम्हारे पाप आदि सभी खतम हो जावेंगे। याद करना भी मासी का घर नहीं है। मुझे याद करने लिए माया तुमको बहुत हैरान करती है। घड़ी भूला देती है। बाबा अनुभव भी सुनाते हैं मैं बहुत कोशिश करता हूं; परन्तु फिर भी माया अटक डालती है। हैं भी दोनों बाप इकट्ठे। इतना होते हुये भी घड़ी–2 भूल जाता है। बड़ा कठिन है। घड़ी–2 यह याद पड़ा, फलाना याद पड़ा। तुम तो बहुत अच्छी पुरुषार्थ करते हो। कोई तो गपोड़ा भी मारते हैं। 10–15 दिन चार्ट रख फिर छोड़ देते। इसमें तो बहुत ही खबरदारी (रख)नी पड़ती है। समझते हैं जब प्योर हो जावेंगे ,कर्मातीत अवस्था को पहुँचेंगे तब ही विन करेंगे। यह ईश्वरीय लॉट्री है ना। बाप को याद करते–2 ,यह है याद की दौड़ी। बुद्धि से समझने की बातें हैं। भल कहते हैं हम याद करते हैं; परन्तु बाबा कहते हैं याद करने आता ही नहीं है। पद में भी फ़र्क पड़ जाता है। कैसे राजाई स्थापन होती है। तुमने अनेक बार राजाई की है। फिर गंवाते हैं। बाबा हर 5000 वर्ष बाद पढ़ाते हैं फिर रावण राज्य में तुम वाममार्ग में चले जाते हो। जो देवताएं थे वही फिर वाममार्ग में गिरते हैं। देवताओं के कितने गन्दे चित्र बनाये हैं। यह सभी निशानियां हैं। बाप (समझाते) हैं क्या–2 कर दिया है। उ(न्)हों का(को) देवताओं की पोशाक तो नहीं देनी चाहिए। तो बाप बड़ी गुह्य–2 बातें समझाते हैं बाप को याद करने की। है तो बहुत सहज। शरीर छोड़कर बाबा के पास चले जावें। समझो कोई गोली खा लेते हैं, समझते हैं भगवान पास चले जावेंगे; परन्तु विकर्म विनाश कैसे हों? वह है कौन जिसके पास जाने चाहते हैं? भल कोई काशी करवट खाते हैं ; परन्तु बाप कहते हैं मुझे जानते थोड़े ही हैं। मुझे जाने तब ही योगबल से विकर्म विनाश हों। वह तो पिछाड़ी में ही हो सकता है। बाकी वापस तो कोई भी आता नहीं। भल कुछ भी करे। योगबल तो मैं ही आकर सिखलाता हूं। फिर आधा कल्प योगबल होता नहीं। वहां तो अथाह सुख भोगते हैं। भक्तिमार्ग में तो कुछ है नहीं। मनुष्य क्या–2 करते रहते हैं। कितने हठयोग आदि सिखाते हैं। कितना क्रोधी होते हैं। अकासुर, बकासुर, जरासिंधी यह भी अभी के ही नाम हैं। प्रैक्टिकल में तुम देखते थे कैसे बच्चों को, स्त्रियों को भगाकर ले जाते थे। भगाते ही रहते हैं जहां–तहां। यहां कितना दुःख है। यह है ही कोस–खाना। काम महाशत्रु है। यह आदि, मध्य, अंत दुःख देने वाला है। इनको ही काम कटारी कहा जाता है। यह है रावण की हिंसा। वहां तो है ही अहिंसा देवी–देवता परमोधर्म। शास्त्रों में तो अनेक बातें लिख दी हैं। ऐसी–2 बातें लिखी हैं जो सुनने से ही लज्जा आती है। सीता के लिए क्या–2 लिख दिया है। ऐसे थोड़े ही है हम शास्त्र नहीं पढ़ते थे। वह तो भक्ति हो ग(ई)। भक्ति अलग है, ज्ञान अलग है। तो फिर भक्ति होती नहीं। ज्ञान से दिन हो गया फिर कोई तकलीफ़ ही नहीं। भक्ति है रात ,धक्का खाने की। वहां तो दुःख की बात ही नहीं। स(य)ह सभी समझाना पड़ता है। वह भी जो यहां का सैंम्पलिंग होगा उनकी ही बुद्धि में बैठेगा। पीछे आया होगा तो कब भी नहीं बैठेंगे। यह बड़ी महीन बातें हैं। बाप कहते हैं जो बहुत ही तमोप्रधान हैं वही ज्ञान उठावेंगे। वण्डरफुल ज्ञान है जो सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। बहुत थोड़े समझने वाले होते हैं। ड्रामा में जो नूँध है उसमें कुछ फ़र्क नहीं पड़ सकता। भगवान किसके तकदीर को बदल न सके। मनुष्य तो समझते हैं भगवान क्या

(..... फिर मुरली कैसे सुनावेंगे? वण्डर खाते हैं ना। फिर पक्के होकर आते हैं। दिल होती है ऐसा बाप वर्सा देने आये हैं उनसे तो मिलें। पहले–2 तो लिखाना चाहिए बताओ तुमको कितने बाप हैं। एक है लौकिक दूसरा है पारलौकिक। एक है शरीर का पिता। दूसरा है आत्माओं का। उस बेहद के बाप को तो सभी याद करते हैं। हे दुःख हर्ता, सुख कर्ता। बाबा आप जब आवेंगे तो आपसे स्वर्ग का वर्सा ज़रूर लेंगे। ऐसे बाप को तुम जानते नहीं हो। न जानने कारण ही निर्धण के बन गये हो। बात ऐसी करनी चाहिए जो एकदम पानी कर देना) कर सकते हैं; परन्तु भगवान तो आते ही एक बार हैं । आकर स्वर्ग का रास्ता बताते हैं। और कुछ भी नहीं। अभी तुम बच्चों की कितनी विशाल बुद्धि हो गई है। और कोई के बुद्धि में आ न सके। तुमको बाप रोज़ कहते हैं अपने 84 जन्मों को बुद्धि में लाओ। स्वदर्शनचक्र तो तुम ब्राह्मणों को ही होता है। उन्होंने तो कृष्ण को ,विष्णु को स्वदर्शनचक्र दे दिया है। ऐसी–2 वण्डरफुल कहानियां बैठ लिखी हैं। तो अभी वण्डरफुल लगता है। तुमको कहते हैं तुम शास्त्रों को नहीं मानते हो। बोलो, हम तो बहुत ही शास्त्र पढ़े ; परन्तु जब भगवान आकर ज्ञान देते हैं जिससे सद्गति होती है तो फिर उसमें शास्त्र आदि की दरकार नहीं रहती। बाप कहते हैं मैं हूं पतित–पावन। मनुष्य तो ऐसे कह न सके। सतयुग में तो पुकारते ही नहीं। टाइम पर ही सुनवाई होती है। कोर्ट में जाना होता है तब ही सुनवाई होती है। जेल से छुड़ाये देते हैं। तो अभी उनकी श्रीमत पर चलना पड़े। बाप समझाते रहते हैं ऐसे–2 करो। दोनों इकट्ठे हैं ना। यह भी किसको .... देखेगा। समझता है इनको शान्ति का दान देना है। बेहद की शान्ति है ना। तो उनको भी एकदम शान्त कर देते हैं। दूसरा भल कोई कितना भी उनको देखे शान्ति नहीं होगी) । देखने से ही मालूम पड़ता है। यह हमारे घराणे का नहीं है। यह तो आसुरी घराणे का है। झट पता पड़ जाता है। जैसे डॉक्टर्स लोग एक्सपेरिमेन्ट्स करते हैं ना। यह भी बाप आत्मा को देखते हैं। आत्मा को कशिश होती है। यह हमारा बाप है। कोई गन्दा होगा तो उनको शान्ति की कशिश नहीं होगी। यह सभी है सर्विसेबुल बच्चों का काम। नब्ज़ देखनी है। इस कशिश से सुनते हैं। बाप को याद कर फिर देखो यह आत्मा हमारे कुल की है? अगर होगी तो एकदम शान्त हो जावेंगे। उठते–बैठते बात करते उस समय ही देखेंगे शान्त हो जावेंगे। तुम थोड़ा ही सिर्फ कहेंगे शिवबाबा को जानते हो? शिवबाबा से बेहद का वर्सा मिलता है। स्वर्ग का मालिक बनते हैं। यह याद आता है? दुनियां में यह थोड़े ही किसको पता है। इन ल.ना. को वर्सा कहां से मिला? तुम अभी (समझ) गये हो। अंत तक सैम्पलिंग निकलते आवेंगे। यह ड्रामा चला(चलता) रहता है। डायरैक्शन भी मिलते रहते हैं। ऐसे–2 सर्विस करो। जहां सन्यासी हैं उन्हों के सामने जाओ। जमकर सेन्टर खोलो। ल.ना. के मन्दिर में सेन्टर खोलो। तो तुमको समझाने में सहज होगा। यह डबल सिरताज कैसे बने हैं हम आप को समझाते हैं। सन्यासी तो राजयोग सिखाये न सकें। ड्रामा अनुसार बच्चे यह सब करने भी रहते हैं। आपे ही विचार–सागर–मंथन कर प्वाइन्ट निकालते हैं। यह है ही तुम बच्चों के लिए। प्वाइन्ट निकालनी होती है। जो इस कुल के होंगे उनको ही रस बैठेगा। एकदम चटक पड़ेगा। जैसे कोई मरे हुये को सांस पड़ जाता है। उनको (जीय)दान मिलता है। विश्व के मालिक बन जाते हो। गीता में अक्षर कितनी अच्छी है; परन्तु किसकी भी बुद्धि बैठती ही नहीं है। मामेकं याद करो तो विश्व के मालिक बन जावेंगे। ज़रूर संगमयुग ही होगा, बाप भी होगा। जैसे और त्योहार है वैसे गीता पढ़ने का त्यौहार भी चला आता है। बाप आते ही हैं सद्गति करने। जितनी जो धारणा करते हैं उतनी वह सर्विस करते हैं। सब्जेक्ट्स तो बहुत हैं। भण्डारी को भी 100 मार्क्स की मदद मिलेगी। कितने को सुख देती है। किसका पुरुषार्थ व्यर्थ नहीं जाता। पुरुषार्थ ऊँच बनने का करना चाहिए। सर्विस बिगर डबल सिरताज कैसे बनेंगे? गृहस्थ व्यवहार में रहते मामेकं याद करो। ईश्वर को पैसे आदि की दरकार ही नहीं। वह तो दाता है ना। ईश्वर ने यह सब दिया है। अच्छा, फिर लिया तो रोते क्यों हो? बड़ी समझ चाहिए। बाप को तो बहुत युक्ति (से) समझाना पड़ता है। ओमशान्ति।